जीवन विद्या : एक परिचय

प्रणेता -

ए. नागराज

श्री भजनाश्रम - श्री नमर्दाचंल
अमरकंटक (म.प्र.)

प्रकाशक :
जीवन विद्या प्रकाशन
श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदाचंल,
अमरकंटक, जिला - शहडोल (म.प्र.)

प्रणेता एवं लेखक :
ए. नागराज

संस्करण :
प्रथम 1999
द्वितीय 2001
तृतीय 2008

सहयोग राशि :
50/- रुपये मात्र

ग्राफिक्स एवं डिजाइन :
आकाश कम्प्यूटर, रायपुर, 94252-04130

भूमिका

मनुष्य इस धरती पर कब आया है यह निश्चित नहीं है। मनुष्य है कि नहीं है ? इस बात पर कोई शंका नहीं होती; क्योंकि मनुष्य होने का हम लोग जीवित प्रमाण हैं । पर मनुष्य क्या है? इस बात का हमें आज तक पता नहीं है । स्वयं को खोजते हुए, जानने का प्रयास करते हुए मनुष्य को सदियाँ बीत गयी है । अपने ही आंतरिक स्वरूप को देखने, समझने के लिए आदमी तरस गया है । अपने परिचय को जानने के लिए आदमी तृषित है और हजारों वर्षों से प्रयासरत भी है । आज दुनिया में अनुसंधानों के ढेर लगे हैं किन्तु आदमी के बारे में अभी तक पता नहीं है ।

ए. नागराज हमारे जैसे ही एक व्यक्ति हैं ; वे अमरकंटक की एकान्तवादियों में जो भारत का सुप्रसिद्ध तीर्थ, नर्मदा नदी का उद्गम स्थल, मेंकल पर्वत की हरी-भरी गोद में आदमी के स्वरूप को खोजने चले आये । मैसूर प्रांत के अपने हरे-भरे गांव अग्रहार को छोड़कर श्री नागराज जिन्हें अब बाबाजी कहते हैं कुछ प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ने आये थे । घोर जंगल, घोर शीत, वर्षा, जंगली जानवर, भोजन की व्यवस्था नहीं और तमाम असुविधाओं में जीकर वे अनुसंधान करते रहे । भारत के सुप्रसिद्ध श्रृंगेरी मठ के शंकराचार्य श्री चंद्रशेखर भारती द्वारा दीक्षित श्री नागराज जी परंपरानुसार विधियों से तप करते रहे । अपने अनुसंधान के क्रम में उनको समाधि की स्थिति प्राप्त हुई । किन्तु अपने प्रश्नों का उत्तर नहीं मिलने के कारण उन्होंने ''संयम'' किया । संयम करने पर बाबाजी को पूरा अस्तित्व समझ में आ गया । अस्तित्व में आदमी भी समझ में आ गया, अस्तित्व में व्यापक सत्ता जिसे हम ईश्वर सत्य ब्रह्म आदि नामों से पुकारते हैं उसका अनुभव हो गया । अस्तित्व में संपूर्ण व्यवस्था समझ में आ गयी । उन्होंने देखा कि संपूर्ण प्रकृति सत्ता में (परमात्मा में) डूबी है, भीगी है, घिरी है ।

सन् 1971 से अपने अनुभव को उन्होंने अपने पास आने वाले लोगों को बताना शुरू किया । इसी क्रम में उनके पास एक ओर देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक, डॉ. सी. व्ही. रमन, परमाणु आयोग के अध्यक्ष डा. भाभा जैसे लोग भी आये तो दूसरी ओर साधारण अनपढ़ कहे जाने वाले ग्रामीण भी आये । उन्होंने सत्य को कहना शुरू किया । जीवन की सच्चाइयाँ जो उनके श्रीमुख से निसृत हुई उनको कुछ लोगों ने समझकर ''जीवन विद्या'' के नाम से शिविरों में अध्ययन कराना प्रारंभ किया है । हम लोगों ने बाबाजी से आग्रह किया कि वे अस्तित्व को, जीवन को जैसा समझे हैं, अपने श्रीमुख से बोलें ताकि एक प्रामाणिक दस्तावेज मानव जाति के लिए उपलब्ध रहे। तब बाबाजी ने मध्यप्रदेश के बस्तर क्षेत्र में चारामा के पास आंवरी आश्रम में जीवन विद्या को तीन दिनों तक प्रस्तुत किया ।

इस प्रस्तुति की वीडियो रिकार्डिंग की गयी तथा सब तक यह बात पहुँच सके इस क्रम में बाबाजी के उद्बोधन को ज्यों का त्यों पुस्तकाकार में छाप दिया जाए, ऐसा सभी मित्रों ने सोचा । इस प्रयोजन को ध्यान में रखकर बाबाजी का 'जीवन विद्या' पर उद्बोधन पुस्तकाकार रूप में प्रस्तुत है । आज इस पुस्तक को मानव जाति को सौंपते हुए हम सभी लोग अतीव प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं । यह पुस्तक मनुष्य को स्वयं के बारे में, अस्तित्व के बारे में भ्रम को दूर करने में उपयोगी होगी - इसी आशा, विश्वास के साथ ।

राजन शर्मा
नंदिनी नगर (दुर्ग)

फागुन पूर्णिमा
2 मार्च, 1999

पूर्वजों–प्रेरकों के प्रति वन्दना

वन्दना उनकी करें, जिनसे सुशोभित है धरा ।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा ।।

जिनसे दिशा हमको मिली, नित मानवीय मार्ग की ।
पथ मिला निश्चित हमें थी, कामना जिस मार्ग की ।।

कृतज्ञता से सौम्यता की, नित्य आयी निरन्तरा ।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा ।।

जिनका है चिन्तन शुभ यही, कैसे हो मानव सुखमयी ?
प्रेरणा से जिनकी है, मानव का जीवन सुखमयी ।।

श्रद्धा समर्पित जिनसे आये, मानवीय परम्परा ।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा ।।

सबके सुख की कामना ले, रहती जिनकी कल्पना ।
निकली जिनसे मानवीय पथ, हेतु निश्चित योजना ।।

पूज्यता उन हेतु जिनसे, है सुसज्जित वसुन्धरा ।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा ।।

प्रदीप 'पूरक'
गोविन्दपुर, बिजनौर

वन्दना

वन्दना के सहज स्वरों से, प्रेरकों की वन्दना ।
अर्चना के सरल स्वरों से, पूर्वजों की अर्चना ।।

पथ मिला जिनसे हमें है, न्याय का और धर्म का ।
सत्यता के अनुभवों से, प्रेरणा मिली प्रेरणा ।।

अर्चना के सरल स्वरों से, पूर्वजों की अर्चना ।
वन्दना के सहज स्वरों से, प्रेरकों की वन्दना ।।

पूर्वजों की कामनाएँ, फल रहीं सच हो रहीं ।
जी रहे हैं सुख से वंशज, है रही यही कामना ।।

अर्चना के सरल स्वरों से, पूर्वजों की अर्चना ।
वन्दना के सहज स्वरों से, प्रेरकों की वन्दना ।।

आओ गायें हम सभी, मंगलमयी सुख–शान्ति गीत ।
हम हैं क्या ? हमने है जाना, है यही पहचानना ।।

अर्चना के सरल स्वरों से, पूर्वजों की अर्चना ।
वन्दना के सहज स्वरों से, प्रेरकों की वन्दना ।।

प्रदीप 'पूरक'
गोविन्दपुर, बिजनौर